सूक्तिसौरभम्

प्रथमपुष्पम्

उच्च प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिए

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

पुरोवाक्

प्रस्तुत पुस्तकमाला "सूक्ति सौरभम्" (तीन खण्डों में) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के पूर्वत: सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की लघुपुस्तकमाला योजना के अन्तर्गत तथा सम्प्रति भाषा विभाग के तत्त्वावधान में कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के लिए पूरक पुस्तक के रूप में लिखी गई है। इसमें जीवनोपयोगी उन कालजयी सूक्तियों को संकलित किया गया है जो संस्कृत छात्रों के अतिरिक्त सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। एं सूक्तियाँ जितनी प्राचीन हैं उतनी ही नवीन हैं। इनके द्वारा छात्रों में मूल्य शिक्षा को देने का प्रयास किया गया है। इनमें आये विचार NCF 2005 की रूपरेखा के अनुरूप हैं। पुस्तकों में सूक्तियों के सरल हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद देकर छात्रों की कठिनाई का निवारण भी कर दिया गया है ताकि छात्र सूक्तियों के भावों को आसानी से हृदयंगम कर सकें। प्रथम खण्ड में वे सूक्तियाँ रखी गयी है जो सरल तथा सुकुमारमति छात्रों की बुद्धि के अनुरूप मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर सके। द्वितीय खण्ड में थोड़ी उच्चस्तरीय सूक्तियों का संकलन किया गया है। जिन्हें अंग्रेजी तथा हिन्दी में अर्था सहित प्रस्तुत किया गया है। तृतीय खण्ड में द्वितीय खण्ड से भी उच्चस्तरीय सूक्तियों को संकलित किया गया है। हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवाद छात्रों की सुविधा के लिए वहाँ भी दिए गए है। इस तरह तीन खण्डों में प्रस्तुत यह सूक्ति सौरभम् पुस्तक माला क्रमश: कक्षा 6-8, 9-10 तथा 11-12 के छात्रों के पूरक पुस्तक के रूप में विकसित की गई है।

सूक्ति सौरभम् के प्रथम खण्ड को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक प्रशन्नता का अनुभव हो रहा है। पूर्व में पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन की प्राथमिकता के कारण इस पुस्तक को नहीं छापा जा सका था। मुझे विश्वास है कि परिषद् के स्वर्णजयन्ती वर्ष में इस पुस्तक का प्रकाशन संस्कृत छात्रों तथा सामान्य संस्कृत जिज्ञासुओं के लिए अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के प्रणयन में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के पूर्व विभागाध्यक्षों सहित भाषा विभाग के अध्यक्ष का अनेकविध मार्गदर्शन रहा है। एतदर्थ पूर्वविभागाध्यक्षों सहित वर्तमान विभागाध्यक्ष हमारे साधुवाद के पात्र है। पुस्तक की सामग्री संकलन/पाण्डुलिपि निर्माणादि कार्यों में अनेकविध सहयोग के लिए श्रीमती उर्मिल खुङ्गर सहित भाषा विभाग के पूर्व संस्कृत आचार्य डॉ कमलाकान्त मिश्र तथा वर्तमान आचार्य डॉ. कृष्णचन्द्र त्रिपाठी तथा असिस्टैन्ट प्रोफेसर डॉ. रणजित बेहरा हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

पुस्तक की पाण्डुलिपि समीक्षा के लिए आयोजित गोष्ठियों में उपस्थित होकर जिन विषय विशेषज्ञों तथा अनुभवी संस्कृत अध्यापकों ने अपने बहुमूल्य सुझावों एवं परामर्श से सहयोग किया है, परिषद् उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है।

पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक का निर्माण एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने हेतु विशेषज्ञों एवं अध्यापको के अनुभव पर आधारित परामर्शों का सहर्ष स्वागत किया जाएगा तथा संशोधित संस्करण तैयार करते समय उनका समुचित उपयोग किया जाएगा।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

भूमिका

संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा है जिसका विशाल साहित्य (वेद, वेदांङ्ग, उपनिषद्, पुराण, विविध, शास्त्र, काव्य आदि) अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह उदात्त संस्कारों के साथ ही साथ शास्त्रीय ज्ञान तथा मौलिक चिन्तन का अगाध स्रोत भी है। इसमें विद्यमान सुभाषित भारतीय मनीषियों के ऐसे सुवचन हैं जो अनुभवों पर आधारित होने के कारण शाश्वत सत्य का उद्घाटन करते हैं तथा विषमता से युक्त इस जगत् में संकटमय किंकर्तव्यविमूढ़ मनुष्यों का मार्गदर्शन करते हैं। लोक-कल्याण के लिए प्रयुक्त ये सूक्तियाँ जीवन की विसंगतियों को सहज एवं सरल रूप से सुलझाने का कार्य करती हैं। इनमें नीति, कर्त्तव्य, सत्य, व्यवहार, परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्वबन्धुत्व सम्बन्धी अनेकानेक शाश्वत जीवनमूल्य विद्यमान हैं। जीवन के यथार्थ का दिग्दर्शन कराने वाली एवं नैतिक मूल्यों को मन-मस्तिष्क में आरूढ़ करने वाली इन सूक्तियों से लोकहित की सहज प्रेरणा मिलती है जिसकी सहायता से मनुष्य अपने जीवन में सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् की आलौकिक छबि प्रकट कर सकता है। भाषागत सरलता, भावों की सहजता तथा संवेदना की गहराई के साथ ही साथ अभिव्यक्ति की मनोरम शैली के कारण सूक्ति साहित्य निश्चय ही अतुलनीय है। उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता के श्लोक या उनके अंश, हितोपदेश, पञ्चतंत्र, नीतिशतक, चाणक्यनीति, विदुरनीति, शुक्रनीति आदि ग्रन्थ इस दृष्टि से विशेष रूप से अवलोकनीय हैं।

शुभचिन्तक मित्र की तरह संस्कृत सूक्तियाँ जन-जन का मार्गदर्शन करती हैं। ये जीवन में परिस्थिति-जनित समस्याओं का सद्यः समाधान सुझाकर मानव को सुख-शान्ति तथा सन्मार्ग की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा प्रदान करती हैं। इनके लघु आकार में जन मानस के लिए व्यावहारिक संदेश तथा शाश्वत जीवनदर्शन के संकेत 'गागर में सागर' की भाँति समाए हुए हैं। इनकी मधुरता की प्रशंसा में एक सूक्ति है-

'तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्'

आज जबकि समाज में मानवीय-मूल्यों का ह्रास हो रहा है तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् इन मूल्यों को छात्रों तथा जन-सामान्य में विकसित करने हेतु कृत-संकल्प है, संस्कृत वाङ्मय से चयनित सूक्तियों का विशेष महत्त्व है। इसी उद्देश्य से पूरक पाठ्यसामग्री के विकासक्रम में संस्कृत लघुपुस्तकमाला योजना के अन्तर्गत विभिन्न शास्त्रों से एवं छात्रों के बौद्धिक स्तर के अनुरूप सुसज्जित **सूक्ति सौरभम्** नामक सुभाषित संग्रह तीन खण्डों में क्रमशः प्रथम खण्ड, द्वितीय खण्ड तथा तृतीय खण्ड के रूप में विकसित किया गया है।

© NCERT not to be republished

विषयानुक्रमणी

सूक्तिसौरभम्
प्रथमपुष्पम् (प्रथम भागः)

1. आदर्शः छात्रः	सुखार्थी	2
	काकचेष्टा	
2. आरोग्यम्	अजीर्णे भेषजं	4
3. उद्यमः	उद्यमेन हि	5
4. कालस्य महत्त्वम्	न कश्चिदपि	6
5. क्षमा	क्षमाशस्त्रं करे	7
6. जनसंख्या शिक्षा	वरमेको गुणी	8
7. त्यागः	रक्षन्ति कृपणाः	9
8. परोपकारः	अष्टादशपुराणेषु	10
	श्रोत्रं श्रुतेनैव	
9. पर्यावरणम्	अहो एषां वरं	12
	पुष्प-पत्र-फलच्छाया	
10. मैत्री	आपत्कालेऽपि सम्प्राप्त	14
11. विद्या	न चौरहार्यं न च राज	
	विद्या ददाति विनयं	
	माता शत्रुः पिता वैरी	
12. नम्रता	नमन्ति फलिनो वृक्षाः	18
13. नारी-सम्मानः	यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते	19
14. विश्वबन्धुत्वम्	अयं निजः परो वेति	20
15. सज्जनः	किमत्र चित्रं	21
16. सत्यम्	सत्यस्य वचनं श्रेयः	22
17. सत्संगतिः	महाजनस्य संसर्गः	23
18. सदाचारः	अभिवादनशीलस्य	24
19. आत्मसम्मानः	अधमा धनमिच्छन्ति	25

© NCERT not to be republished

सूक्तिसौरभम्
प्रथमपुष्पम् (द्वितीय भागः)

1. आदर्शचर्या	शुकवत् भाषणं	27
2. षड्दोषाः	षड्दोषाः पुरुषेणेह	28
3. आदर्शः छात्रः	यथा खनन्?	29
4. व्यायामः	लाघवं कर्मसामर्थ्यं	30
5. उद्यमः	गच्छन् पिपीलको	31
	विहाय पौरुषं	
6. क्षमा	क्षमा बलमशक्तानां	33
	नरस्याभरणं रूपं	
7. जनसंख्या-शिक्षा	एकोऽपि गुणवान्पुत्रो	35
8. धर्म-लक्षणम्	धृतिः क्षमा	36
9. धर्मस्य प्रमाणम्	वेदः स्मृतिः	37
10. पण्डितलक्षणम्	मातृवत् परदारेषु	38
11. परोपकारः	पिबन्ति नद्यः	39
	यस्मिन् जीवति	
12. मनस्विता	कुसुमस्तवकस्येव	41
	तरवोऽपि हि	
13. मानव-कल्याणम्	सर्वे भवन्तु	43
14. मैत्री	उत्सवे व्यसने	44
	परोक्षे कार्यहन्तारं	
15. तपो-महत्त्वम्	विश्वामित्रो वसिष्ठश्च	46
16. विद्यामहिमा	यः पठति	47
	कामधेनुगुणा विद्या	
	किं तस्य	
	विद्वत्वं च	
	एकेनापि सुपुत्रेण	
17. सज्जन-प्रशंसा	नारिकेलसमाकाराः	51
18. सत्यम्	सत्यं धर्मस्तपो	52
19. वाणी-धर्मः	सत्यं ब्रूयात्	53
20. सत्सगति	विकृतिं नैव	54
21. अग्रसोची सदा सुखी	चिन्तनीया हि	55

© NCERT not to be republished

सूक्तिसौरभम्
प्रथमपुष्पम् (तृतीय भागः)

1. आरोग्यम्	अनारोग्यमनायुष्यम्	57
2. आरोग्यहेतवः	प्राणायामेन युक्तेन	58
3. उद्यमः	उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति	59
	पश्य कर्मवशात्	
4. एकता	न वै भिन्ना	61
5. क्षमा	एकः क्षमावतां	62
	सोऽस्य दोषो	
6. जनसंख्या-शिक्षा	एकेनापि सुवृक्षेण	64
	किं जातैर्बहुभिः	
7. त्यागः	उपार्जितानां वित्तानां	66
8. धर्ममार्गः	इज्याध्ययनदानानि	67
9. धैर्यम्	छिन्नोऽपि रोहति	68
10. परोपकारः	छायामन्यस्य कुर्वन्ति	69
11. पर्यावरणम्	वनस्पतीनां सर्वेषा-	70
12. मनस्विता	पादाहतं यदुत्थाय	71
	मनस्वी म्रियते	
13. मैत्री	ददाति प्रतिगृह्णाति	73
14. राष्ट्रहितम्	प्रजासुखे सुखं	74
	भयार्तानां भयात्	
15. वर्णसाम्यम्	न विशेषोऽस्ति	76
16. विद्या	प्रथमे नार्जिता	77
	विद्या विवादाय धनं	
17. विद्यामहिमा	रूपयौवनसम्पन्ना	79
18. सज्जनः	गंगा पापं	80
19. सज्जनमहिमा	मनस्यन्यद् वचस्यन्यद्	81
20. सज्जनस्वभावः	उपकर्तुं प्रियं	82

© NCERT not to be republished

21. सत्यम्	नास्ति सत्यसमो	83
	सत्यमेवश्वरो लोके	
22. सत्संगतिः	दुर्जनः परिहर्तव्यो	85
23. सदाचारः	न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं	86
24. समय-निष्ठा	नष्टं द्रव्यं	87
	श्वः कार्यमद्य	
25. मिथ्यंहकारः	अगाधजलसञ्चारी न	89
26. स्वावलम्बनम्	न याचेत	90
श्लोकानुक्रमणी		**91–95**

© NCERT not to be republished

सूक्तिसौरभम्

प्रथमपुष्पम्

प्रथमो भागः

© NCERT not to be republished

1. आदर्शः छात्रः

सुखार्थी त्यजते विद्यां
विद्यार्थी त्यजते सुखम्।
सुखार्थिनः कुतो विद्या
कुतो विद्यार्थिनः सुखम्॥1॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम्, 158/216)

या तो सुख चाहने वाला विद्या को छोड़ दे या विद्या चाहने वाला सुख को। सुखार्थी को विद्या कहाँ और विद्यार्थी को सुख कहाँ।

Either comfort seeker should give up learning or a learning seeker should give up comforts. How can a comfort seeker get learning and how can a learning seeker afford comforts.

© NCERT not to be republished

काकचेष्टा वकध्यानं,

शुनो निद्रा तथैव च।

अल्पाहारी गृहत्यागी,

विद्यार्थी पञ्चलक्षणः॥2॥

(कस्यचित्)

छात्र के पाँच लक्षण होते हैं – कौवे के समान सतत सतर्क रहना, बगुले के समान मन को लक्ष्य पर एकाग्र रखना, कुत्ते के समान हल्की नींद सोना, अल्प भोजन करना तथा घर की आसक्ति का त्याग करना।

There are five characteristics of a student – He should be vigilant like a crow, should concentrate like a crane on its object, should sleep like a dog, eat less and should be detached from his home.

© NCERT not to be republished

2. आरोग्यम्

अजीर्णे भेषजं वारि
जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि
भोजनान्ते विषप्रदम्॥3॥

(वैद्यकीयसाहित्यसुभाषितम् 10/19)

अजीर्ण में (भोजन के न पचने पर) पानी का सेवन औषधि का काम करता है। भोजन पच जाने पर सेवन किया हुआ जल बलदायक होता है। भोजन के बीच में सेवन किया हुआ जल अमृत के समान होता है किंतु भोजन के अंत में सेवन किया हुआ जल विषवत् होता है।

Water is a medicine in indigestion. It gives energy when taken after digestion. Water taken during the course of a meal is like nectar but is like poison when taken just after it.

© NCERT not to be republished

3. उद्यमः

उद्यमेन हि सिध्यन्ति
कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य
प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥4॥

(पञ्चतन्त्रम् मित्रसम्प्राप्तिः 138)

उद्यम (परिश्रम) से ही कार्य सिद्ध होते हैं, केवल इच्छाओं से नहीं। सोये हुए शेर के मुख में पशु स्वयं ही प्रवेश नहीं करते।

Every work is accomplished by efforts, not by mere desires. The animals themselves do not enter the mouth of a sleeping lion.

© NCERT not to be republished

4. कालस्य महत्त्वम्

न कश्चिदपि जानाति

किं कस्य श्वो भविष्यति।

अतः श्वः करणीयानि,

कुर्यादद्यैव बुद्धिमान् ॥5॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 160/41)

कोई भी नहीं जानता कि कल किसके साथ क्या होने वाला है। इसलिए जो कल करना हो, बुद्धिमान उसे आज ही कर लें।

No body knows what would happen to him tomorrow. So the wise should do today itself, whatever is to be done tomorrow.

© NCERT not to be republished

5. क्षमा

क्षमाशस्त्रं करे यस्य

दुर्जनः किं करिष्यति।

अतृणे पतितो वह्निः

स्वयमेवोपशाम्यति ॥6॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 160/40)

जिस के हाथ में क्षमा रूपी शस्त्र है, दुर्जन उसका क्या बिगाड़ सकता है। तृण रहित स्थान पर पड़ी हुई अग्नि स्वयं ही बुझ जाती है।

What harm can a wicked do to a person who has the weapon of forgiveness in his hand. The fire, in strawless place, is extinguished by itself.

© NCERT not to be republished

6. जनसंख्या शिक्षा

वरमेको गुणी पुत्रो
न च मूर्खशतान्यपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति
न हि तारागणोऽपि च॥7॥

(हितोपदेशप्रस्तावना 17)

एक गुणवान् पुत्र सैकड़ों मूर्ख पुत्रों से कहीं अच्छा है। अकेला ही चन्द्रमा अन्धकार का नाश कर देता है, तारों का समूह नहीं।

One meritorious son is far better than hundreds of foolish sons. One moon alone dispels the darkness of night and not group of stars.

© NCERT not to be republished

7. त्यागः

रक्षन्ति वश्रुपणाः पाणौ

द्रव्यं क्रव्यमिवात्मनः।

तदैव सन्तः सतत-

मुत्सश्जन्ति यथा मलम् ॥8॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 73/3)

कंजूस व्यक्ति हाथ आये धन की अपने हाड़-मांस की तरह रक्षा करते हैं। उसी धन को सज्जन मैल समझकर निरन्तर त्याग करते हैं।

The misers protect the wealth in hand like their own flesh and blood but the same is continuously given up by the noble one like an impurity.

© NCERT not to be republished

8. परोपकारः

अष्टादशपुराणेषु

व्यासस्य वचनद्वयम्।

परोपकारः पुण्याय

पापाय परपीडनम् ॥9॥

(कस्यचित्)

अठारह पुराणों में वेदव्यास के दो ही वचन हैं – परोपकार से पुण्य प्राप्त होता है और दूसरों को दुख देने से पाप।

There are two important teachings of Vedah vyas in all the Eighteen Purans – Serving others is virtuous and causing suffering for others is sin.

© NCERT not to be republished

श्रोत्रं श्रुतेनैव न च कुण्डलेन

दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।

विभाति कायः करुणापराणां,

परोपकारेण न चन्दनेन॥10॥

(नीतिशतकम् 13)

कान शास्त्र-श्रवण से ही सुशोभित होते हैं, कुण्डल से नहीं। हाथ दान देने से ही सुशोभित होते हैं, कंगन से नहीं। दयालु मनुष्यों का शरीर परोपकार से ही सुशोभित होता है, चन्दन से नहीं।

The ears are adorned only by listening to the Shastras and not by ear-rings. The hands are adorned by donations and not by bracelets. The body of the compassionate is similarly adorned only by good deeds and not by sandal-paste.

© NCERT not to be republished

9. पर्यावरणम्

अहो एषां वरं जन्म
सर्वप्राण्युपजीवनम्।
सुजनस्येव येषां वै
विमुखाः यान्ति नार्थिनः ॥11॥

(भागवतपुराणम् 10/22)

अहो, समस्त प्राणियों के उपजीव्य सज्जन-तुल्य इन (वनस्पतियों) का जन्म धन्य है, जिनके द्वार से याचक निराश नहीं लौटते।

Blessed are these trees, which like noble man are the sole source of living for all creatures and who do not disappoint any needy person coming to them.

© NCERT not to be republished

पुष्प-पत्र-फलच्छाया

मूलवल्कलदारुभिः।

धन्या महीरुहा येषां

विमुखा यान्ति नार्थिनः ॥12॥

(सुभाषितावलिः 121/789)

वे वृक्ष धन्य हैं जिनके पास से याचक फूल, पत्ते, फल, छाया, जड़, छाल और लकड़ी से लाभान्वित होते हुए कभी भी निराश नहीं लौटते।

Blessed are the trees, which by hestowing flowers. Leaves, fruits, shades, roots, bark and wood never disappoint needy ones.

© NCERT not to be republished

10. मैत्री

आपत्कालेऽपि सम्प्राप्ते,

यन्मित्रं मित्रमेव तत्।

वृद्धिकाले तु सम्प्राप्ते,

दुर्जनोऽपि सुहृद् भवेत् ॥13॥

(पञ्चतन्त्रम् मित्रसम्प्राप्तिः 118)

जो व्यक्ति विपत्ति काल में भी मित्र बना रहता है, वही (सच्चा) मित्र है। सम्पत्ति काल में तो दुर्जन भी मित्र बन जाता है।

A real friend is one who remains a friend even in adversity. In prosperity, even the wicked becomes friend.

© NCERT not to be republished

11. विद्या

न चौरहार्यं न च राजहार्यं
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥14॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 30/13)

विद्या रूपी धन चोरों द्वारा चुराया नहीं जा सकता, न ही राजा के द्वारा छीना जा सकता, न ही भाई-बन्धुओं द्वारा बाँटा जा सकता और न ही यह भारस्वरूप है। यह विद्या-धन खर्च करने पर निरन्तर बढ़ता रहता है। अतः विद्या ही सभी प्रकार के धनों से श्रेष्ठ है।

The wealth of learning can neither be stolen by thieves, nor can it be taken away by the kin, nor can it be shared by kith and kins, nor even it is burdensome. Even if spent constantly it keeps on increasing. Thus the wealth of learning is the best of all.

© NCERT not to be republished

विद्या ददाति विनयं

विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति

धनाद् धर्मं ततः सुखम्॥15॥

विद्या विनम्रता प्रदान करती है। विनम्रता से योग्यता आती है। योग्यता से मनुष्य धन प्राप्त करता है। वह धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त करता है।

The learning makes one humble. Through humbleness one achieves capability. Capability brings wealth. Through wealth one attains righteousness which in turn brings happiness.

© NCERT not to be republished

माता शत्रुः पिता वैरी

येन बालो न पाठितः।

न शोभते सभामध्ये

हंसमध्ये बको यथा॥16॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभः, 38)

वे माता-पिता शत्रु हैं जो अपनी संतान को शिक्षा नहीं दिलाते। अशिक्षित संतान विद्वानों की सभा में उसी प्रकार शोभा नहीं पाती जिस प्रकार हंसों में बगुला।

The parents who do not educate their children are their enemies. An uneducated child does not shine in the assembly of learned people just a crane amongst the swans.

© NCERT not to be republished

12. नम्रता

नमन्ति फलिनो वृक्षाः
नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च
न नमन्ति कदाचन॥17॥

(कस्यचित्)

फलों से लदे वृक्ष झुक जाते हैं। गुणों से युक्त व्यक्ति विनम्र रहते हैं। फलहीन सूखे पेड़ तथा मूर्ख व्यक्ति कभी नहीं झुकते।

The fruit-laden trees always bend, low the virtuous people are always humble and polite, but the dried (fruitless) trees and the fools never leened down.

© NCERT not to be republished

13. नारी-सम्मानः

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥18॥

(मनुस्मशतिः 3/56)

जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं। जहाँ उनका सम्मान नहीं होता, वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल हो जाती हैं।

God rejoice the most where women are respected, where they are not respected, all the activities become useless.

© NCERT not to be republished

14. विश्वबन्धुत्वम्

अयं निजः परो वेति
गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु
वसुधैव कुटुम्बकम् ॥19॥

(हितोपदेशः संधि,133)

यह अपना है या पराया– इस प्रकार का विचार संकीर्ण मन वाले करते हैं, परन्तु विशाल हृदय वालों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार है।

This is mine or this belongs to someone else is the thought of narrow minded persons but for there who are broad minded the whole universe is like a family.

© NCERT not to be republished

15. सज्जनः

किमत्र चित्रं यत्सन्तः
परानुग्रहतत्पराः।
न हि स्वदेहशैत्याय
जायन्ते चन्दनद्रुमाः॥20॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 47/34)

यदि सज्जन दूसरों पर अनुग्रह करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं तो इसमें कौन-सी विचित्रता है। चन्दन के वृक्ष मात्र स्वयं को ठंडक पहुँचाने के लिए नहीं होते।

What is surprising if the noble always extend their helping hand to others. Sandal trees do not grow to cool their own body.

© NCERT not to be republished

16. सत्यम्

सत्यस्य वचनं श्रेयः

सत्यादपि हितं वदेत्।

यद्भूतहितमत्यन्तं

तत्सत्यमिति कथ्यते॥21॥

(व्याख्यानमाला 4/9)

सत्य बोलना अच्छा है। हितकारी वचन सत्य से भी श्रेयस्कर है। वस्तुतः जो वाणी सभी प्राणियों के अत्यन्त हित में हो, वही सत्य है।

Speaking truth is good but even better than truth is speaking who is benefitial as well. In fact that which is totally in the interest of all beings is the truth.

© NCERT not to be republished

17. सत्संगतिः

महाजनस्य संसर्गः

कस्य नोन्नतिकारकः।

पद्मपत्रस्थितं वारि

धत्ते मुक्ताफलश्रियम्॥22॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 90/2)

महापुरुषों की संगति किसकी उन्नति नहीं करती? कमल के पत्ते पर पड़ी हुई जल की बूँद मोती की शोभा को धारण कर लेती है।

Who is not elevated by the company of great men,
a drop of water on a lotus leaf shines like a pearl.

© NCERT not to be republished

18. सदाचारः

अभिवादनशीलस्य

नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते

आयुर्विद्यायशोबलम् ॥23॥

(महाभारतम् 5/39/60)

गुरुजनों का अभिवादन करने वाले तथा वृद्धजनों की सेवा करने वालों की चार वस्तुएँ निरन्तर वृद्धि को प्राप्त होती हैं – आयु, विद्या, यश तथा बल।

One who respects the elders and serves them, is blessed with the increase in the span of life, learning, fame and strength.

© NCERT not to be republished

19. आत्मसम्मानः

अधमा धनमिच्छन्ति

धनमानौ च मध्यमाः।

उत्तमा मानमिच्छन्ति

मानो हि महतां धनम्॥24॥

(चाणक्यशतकम् 4/18)

अधम श्रेणी के लोग केवल धन की कामना करते हैं। मध्यम श्रेणी के लोग धन के साथ-साथ सम्मान भी चाहते हैं। उत्तम श्रेणी के लोग केवल सम्मान ही चाहते हैं। सम्मान ही महापुरुषों का धन है।

The low persons desire only wealth. The mediocre desire not just wealth but self-respect as well, the great longs for respect alone. Indeed, self-respect is the only treasure for them.

© NCERT not to be republished

सूक्तिसौरभम्

प्रथमपुष्पम्

द्वितीयो भागः

© NCERT not to be republished

1. आदर्शचर्या

शुकवत् भाषणं कुर्यात्
बकवद्ध्यानमाचरेत्।
अजवच्चर्वणं कुर्याद्
गजवत्स्नानमाचरेत् ॥1॥

(वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम् 8/10)

तोते के समान (स्पष्ट) बोलना चाहिए, बगुले के समान (लक्ष्य का) ध्यान करना चाहिए। बकरी के समान भोजन को धीर-धीरे चबाना चाहिए और हाथी के समान (मस्ती से) स्नान करना चाहिए।

One should speak (clearly) like a parrot, should be attentive like a crane, chew like a goat and take bath like an elephant.

© NCERT not to be republished

2. षड्दोषाः

षड्दोषाः पुरुषेणेह
हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं
क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता॥2॥

(महाभारतम्, उद्योगपर्व 33/78)

इस संसार में कल्याण के इच्छुक मनुष्य को ये छह दोष छोड़ देने चाहिए – निद्रा, ऊंघना, भय, क्रोध, आलस्य और कार्य करने में विलम्ब करना।

Person desirious of welfare in the world should give up these six vices – excessive sleep, drowsiness, fear, anger, laziness and slow in work.

© NCERT not to be republished

3. आदर्शः छात्रः

यथा खनन् खनित्रेण
नरो वार्यधिगच्छति।
तथा गुरुगतां विद्यां
शुश्रूषुरधिगच्छति॥3॥

(मनुस्मृतिः 2/218)

जिस प्रकार कुदाल से खोदते हुए मनुष्य पानी प्राप्त कर लेता है, उसी प्रकार सेवा भाव रखने वाला छात्र भी गुरु में स्थित समस्त विद्याओं को प्राप्त करता है।

A student devoted to his teacher attains full knowledge present in him, just as a man obtains water digging by a spade.

© NCERT not to be republished

4. व्यायामः

लाघवं कर्मसामर्थ्यं

स्थैर्यं दुःखसहिष्णुता।

दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च

व्यायामादुपजायते ॥4॥

(चरकसंहिता 7/32)

व्यायाम से हलकापन, कार्य करने की क्षमता, स्थिरता, दुःख सहने की शक्ति, विकारों का नाश और पाचन शक्ति की वृद्धि होती है।

Exercises bring in lightness, capacity to work, stability, forbearance, mitigation of bodily humours (Vat, Pitta, Cough) and increase in digestive power.

© NCERT not to be republished

5. उद्यमः

गच्छन् पिपीलको याति
योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि
पदमेकं न गच्छति॥5॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 86/11)

चलती हुई चींटी सैकड़ों योजन पार कर लेती है। बिना चले तो गरुड़ भी एक कदम नहीं जाता।

A moving ant covers hundreds of yojanas (i.e., hundreds of K.M.) without moving even Garuda will not go a step further.

© NCERT not to be republished

विहाय पौरुषं यो हि

दैवमेवावलम्बते।

प्रासादसिंहवत् तस्य

मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः॥6॥

(व्याख्यानमाला 59/152)

जो (व्यक्ति) पुरुषार्थ को छोड़कर भाग्य के ही सहारे बैठा रहता है वह महल में स्थित सिंह की मूर्ति के समान है जिसके सिर पर कौवे बैठते हैं।

A person who depends only on fate leaving all efforts, is like the statue of a lion in a palace, on whose head rest the crows.

© NCERT not to be republished

6. क्षमा

क्षमा बलमशक्तानां

शक्तानां भूषणं क्षमा।

क्षमा वशीकृतिर्लोके,

क्षमया किन्न साध्यते॥7॥

(व्याख्यानमाला 3/2)

क्षमा निर्बल मनुष्यों का बल है। क्षमा शक्ति मनुष्यों का आभूषण है। संसार में क्षमा, वशीकरण मंत्र है। क्षमा से क्या सिद्ध नहीं होता?

Forgiveness is the strength of the incapable.
Forgiveness is the ornament of capable ones.
Forgiveness is the formula of control in this world.
What, indeed, cannot be achieved by forgiveness?

© NCERT not to be republished

नरस्याभरणं रूपं रूपस्याभरणं गुणः।

गुणस्याभरणं ज्ञानं ज्ञानस्याभरणं क्षमा।।8।।

(व्याख्यानमाला)

मनुष्य का आभूषण रूप है। रूप का आभूषण गुण है। गुण का आभूषण ज्ञान है और ज्ञान का आभूषण क्षमा है।

Man is adorned by beauty. Beauty is adorned by virtues. Virtues are adorned by wisdom and the wisdom is adorned by forgiveness.

© NCERT not to be republished

7. जनसंख्या-शिक्षा

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो
निर्गुणैश्च शतैर्वरः।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति
न हि तारागणोऽपि च ॥9॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 94/1)

सैकड़ों गुणहीन पुत्रों से एक गुणवान् पुत्र कहीं अच्छा है। एक चन्द्रमा अन्धकार को दूर कर देता है, अनेक तारों के समूह नहीं।

One meritorious son is far better than hundreds of meritless sons. One moon dispels the darkness but not the group of stars.

© NCERT not to be republished

8. धर्म-लक्षणम्

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं

शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्यासत्यमक्रोधो.

दशंक धर्मलक्षणम्॥10॥

मनुस्मशतिः 6/92)

धर्म के दस लक्षण हैं - धैर्य, क्षमा, चित्त का दमन, चोरी न करना, निर्मलता, इन्द्रिय-निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोध का अभाव।

The ten characteristics of Dharma are – tolerance, forgiveness, control of mind, non-stealing, purity, control of senses, wisdom, knowledge, truth and absence of anger.

© NCERT not to be republished

9. धर्मस्य प्रमाणम्

वेदः स्मृतिः सदाचारः

स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः

साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥11॥

(मनुस्मशतिः 2/12)

वेद, स्मृति, सदाचार तथा अपने अन्तःकरण का प्रिय- ये चार धर्म के साक्षात् लक्षण कहे गए हैं।

The four authorities in the matter of righteousness are – Vedas, Smritis, good conduct of the noble and self-satisfaction.

© NCERT not to be republished

10. पण्डितलक्षणम्

मातृवत् परदारेषु

परद्रव्येषु लोष्ठवत्।

आत्मवत् सर्वभूतेषु

यः पश्यति सः पण्डितः॥12॥

(चाणक्यनीतिः12/14)

जो दूसरों की स्त्रियों को माता के समान, दूसरों के धन को मिट्टी के ढेले के समान तथा सभी प्राणियों को अपने समान देखता है, वस्तुतः वही विवेकी पुरुष है।

He alone is a wise man, who looks upon others wives as his mother others wealth as a lump of clay and all other beings as his own self.

© NCERT not to be republished

11. परोपकारः

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः।
नादन्ति शस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकाराय सतां विभूतयः॥13॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 49/170)

नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं। वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते। बादल, निस्सन्देह फसलों को स्वयं नहीं खाते। सज्जनों की सम्पत्तियाँ दूसरों के उपकार के लिए ही होती हैं।

The rivers do not themselves, drink their water. The trees do not themselves, eat their fruits. The clouds, indeed, do not eat the crops themselves. The assets of the nobles are meant for the welfare of others.

© NCERT not to be republished

यस्मिन् जीवति जीवन्ति

बहवः स तु जीवति।

काकोऽपि किन्न कुरुते

चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥14॥

(हितोपदेशः 33)

उसी का जीवन सफल है, जिसके जीवन से बहुतों को जीवन मिलता है। क्या कौवा अपनी चोंच से अपना पेट नहीं भरता?

He alone lives, on whose life depend lives of many others. Does a crow not fill up it gelley with its healo?

© NCERT not to be republished

12. मनस्विता

कुसुमस्तवकस्येव
द्वे वश्त्ती तु मनस्विनः।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य
शीर्यते वन एव वा॥15॥

(नीतिशतकम् 1/3)

फूलों के गुच्छे के समान मनस्वी व्यक्ति की दो ही गतियाँ होती हैं – या तो ये सारे संसार के सिरमौर बन जाते हैं या वन में ही सूख कर झड़ जाते हैं।

The strong minded persons have two fold behaviour like a bunch of flowers either it is on the top of the whole world or withers away in the forest.

© NCERT not to be republished

तरवोऽपि हि जीवन्ति

जीवन्ति मृगपक्षिणः।

स जीवति मनो यस्य

मननेनोपजीवति॥16॥

(वैद्यकीयसुभाषितसाहित्यम् 40/7)

वृक्ष भी जीते हैं और पशु-पक्षी भी जीते हैं, परन्तु वही वस्तुतः जीवित है जिसका मन चिन्तन-मनन में रमा रहता है।

The trees live and so also the animals and birds. but he alone truly lives whose mind is engrossed in deep thinking.

© NCERT not to be republished

13. मानव-कल्याणम्

सर्वे भवन्तु सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्॥17॥

(कस्यचित्)

सभी सुखी हों, सभी रोगरहित हों, सभी कल्याण देखें। कोई भी दुख का भागी न हो।

May all be happy, may all be free from diseases. May all see to the welfare of all, may none be unhappy.

© NCERT not to be republished

14. मैत्री

उत्सवे व्यसने चैव

दुर्भिक्षे शत्रुविग्रहे।

राजद्वारे श्मशाने च,

यस्तिष्ठति स बान्धवः॥18॥

(पञ्चतन्त्रम्, अपरीक्षितकारकम् 39)

जो व्यक्ति उत्सव में, विपत्ति में, अकाल में, शत्रु के साथ युद्ध होने पर, राजदरबार में तथा श्मशान में साथ देता है, वही वास्तव में मित्र है।

One who stands by in festivals, adversities, famines, in valtres with enemies, in the court and cremation ground, is a real friend.

© NCERT not to be republished

परोक्षे कार्यहन्तारं

प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।

वर्जयेत् तादृशं मित्रं

विषकुम्भं पयोमुखम्॥19॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 92/1)

पीठ-पीछे काम को बिगाड़ने वाले और सामने मीठा बोलने वाले ऐसे मित्र को, मुख पर अर्थात् ऊपर अमृत किन्तु भीतर विष से भरे घड़े के समान छोड़ देना चाहिए।

A friend spoiling the work at the back but speaking sweet words on the face, should be abandoned like a pitcher full of poison covered with nectar at the top.

© NCERT not to be republished

15. तपो-महत्त्वम्

विश्वामित्रो वसिष्ठश्च

मतङ्गो नारदादयः।

तपोविशेषैः संप्राप्ता

उत्तमत्वं न जातितः॥20॥

(व्याख्यानमाला 5/54)

विश्वामित्र, वसिष्ठ, मतङ्ग तथा नारद आदि ऋषियों ने विशिष्ट तपस्या से ही उत्तम पद प्राप्त किया था न कि जाति से।

Vishvamitra, Vasishtha, Matanga and Narada etc. could attain the highest place by specific penance only and not by caste.

© NCERT not to be republished

16. विद्यामहिमा

यः पठति लिखति पश्यति

परिपृच्छति पण्डितानुपाश्रयति।

तस्य दिवाकरकिरणै-

र्नलिनीदलमिव विकास्यते बुद्धिः॥21॥

(व्याख्यानमाला 40)

जो व्यक्ति पढ़ता है, लिखता है, देखता है, प्रश्न पूछता है तथा विद्वानों का आश्रय लेता है, उसकी बुद्धि वैसे ही खिल जाती है जैसे सूर्य की किरणों से कमलिनी।

The intellect of one who reads, writes, sees, asks questions and seeks resort with the learned, blossoms like a lotus flower with the rays of the sun.

© NCERT not to be republished

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।

प्रवासे मातश्सदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्॥22॥

(व्याख्यानमाला 64/18)

कामधेनु के समान गुण वाली विद्या असमय में फल प्रदान करती है। यह परदेश में माता के समान होती है। इसलिए विद्या को गुप्त धन माना जाता है।

The learning has the qualities of the Kamdhenu (wish granting cow) gives fruits any time. It is like ones own mother in a foreign land. Hence learning is considered to be a hidden treasure.

किं तस्य मानुषेत्वेन बुद्धिर्यस्य न निर्मला।

बुद्ध्याऽपि किं फलं तस्य येन विद्या न संचिता॥23॥

(व्याख्यानमाला 15/30)

What is the use of being a man whose intellect is not purified. What is the use of one's intellect who has not acquired knowledge.

© NCERT not to be republished

विद्वत्वं च नृपत्वं च

नैव तुल्ये कदाचन।

स्वदेशे पूज्यते राजा

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥24॥

(सुभाषितावली, 34/26)

विद्वान् होना और राजा होना कभी भी एक समान नहीं हैं। राजा अपने देश में ही पूजा जाता है, विद्वान् तो सभी स्थानों पर पूजा जाता है।

Being learned and being a king, can never be equated. The king is honoured only in his own country whereas the learned is honoured at all places.

© NCERT not to be republished

एकेनापि सुपुत्रेण

विद्यायुक्तेन भासते।

कुलं पुरुषसिंहेन

चन्द्रेणेव हि शर्वरी॥25॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 15/4)

एक ही विद्वान्, सिंह सदृश, सुपुत्र से समस्त कुल प्रकाशित होता है जैसे चन्द्रमा से रात्रि।

The whole family shines with one good son only who is learned and is like a lion amongst men, just as the night shines by the moon alone.

© NCERT not to be republished

17. सज्जन-प्रशंसा

नारिकेलसमाकाराः

दृश्यन्ते भुवि सज्जनाः।

अन्ये बदरिकाकाराः

बहिरेव मनोहराः॥26॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभः 95)

इस संसार में सज्जन व्यक्ति (नारियल के समान) बाहर से कठोर तथा अन्दर से कोमल स्वरूप वाले दिखाई देते हैं। अन्य लोग अर्थात् दुर्जन बेर के समान बाहर से ही मनोहर दिखाई देते हैं।

The noble persons look like a coconut fruit (hard outwardly and sweet inwardly). Others look only outwardly attractive like jujube (Bere) fruits.

© NCERT not to be republished

18. सत्यम्

सत्यं धर्मस्तपो योगः

सत्यं ब्रह्म सनातनम्।

सत्यं यज्ञः प्रोक्तः

सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्॥27॥

(महाभारतम्, अनुशासनपर्व 156/6)

सत्य ही धर्म है, तप है, योग है और सत्य ही सनातन ब्रह्म है। सत्य ही सर्वोत्तम यज्ञ है। सत्य पर ही सब कुछ टिका हुआ है।

Truth is righteousness penance, meditation and eternal Brahma. Truth is said to be the supreme sacrifice. Everything is based upon truth only.

© NCERT not to be republished

19. वाणी-धर्मः

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्
न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात्
एष धर्मः सनातनः॥28॥

(मनुस्मृतिः 4/138)

सच बोलना चाहिए। प्रिय बोलना चाहिए। कड़वा सच नहीं बोलना चाहिए और मीठा झूठ भी नहीं। यही सनातन धर्म है।

One should speak the truth which is pleasant. One should not utter unpleasant truth and also not utter pleasant but false. This is the eternal law of speech.

© NCERT not to be republished

20. सत्सङ्गतिः

विकृतिं नैव गच्छन्ति,

संगदोषेण साधवः।

आवेष्टितं महासर्पैः

चन्दनं न विषायते॥29॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः 323)

सज्जन लोग संगति के दोष से दूषित नहीं होते। चन्दन वृक्ष बड़े-बड़े साँपों से घिरे रहने पर भी विषैला नहीं होता।

The noble people do not become wicked due to bad company. A sandal tree does not become poisonous even if it encircled by big serpants.

© NCERT not to be republished

21. अग्रसोची सदा सुखी

चिन्तनीया हि विपदाम्
आदावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं
प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥30॥

(शार्ङ्गधरपद्धतिः 1440)

विपत्ति से पूर्व ही उसका निदान सोच लेना चाहिए। घर में आग लग जाने पर कुआँ खोदना ठीक नहीं।

Remedies should be thought of much before the onslaught of the calamities. It is not right to dig a well when the house is on fire.

© NCERT not to be republished

सूक्तिसौरभम्

प्रथमपुष्पम्

तृतीयो भागः

© NCERT not to be republished

1. आरोग्यम्

अनारोग्यमनायुष्यम्
अस्वर्ग्यं चातिभोजनम्।
अपुण्यं लोकविद्विष्टं
तस्मात् तत् परिवर्जयेत्॥1॥

(मनुस्मृतिः 2/57)

आवश्यकता से अधिक भोजन से बीमारियाँ होती हैं, आयु कम होती है। वह कष्टदायक होता है और पाप का कारण होता है। वह लोक में विद्वेष भी पैदा करता है। अतः अधिक भोजन नहीं करना चाहिए।

The excess eating causes disease reduces life span, gives troubles, is a source of sin and excess eater is disliked by people. Hence one should avoid excess eating.

© NCERT not to be republished

2. आरोग्यहेतवः

प्राणायामेन युक्तेन
सर्वरोगक्षयो भवेत्।
अयुक्ताभ्यासयोगेन
सर्वरोगस्य संभवः॥2॥

(हठयोग प्रदीपिका)

विधिपूर्वक प्राणायाम करने से सभी रोगों का नाश होता है और विधि –विरुद्ध प्राणायाम का अभ्यास करने से बीमारियाँ होती हैं।

All the diseases are destroyed by practicing Pranayama properly. But all the diseases are caused by practising Pranayama improperly.

© NCERT not to be republished

3. उद्यमः

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः

दैवं हि दैवमिति कापुरुषाः वदन्ति।

दैवं निहत्य कुरु पौरुषात्मशक्त्या

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः॥3॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 83/20)

लक्ष्मी सदैव उद्यमी पुरुष सिंह को ही प्राप्त होती है। 'लक्ष्मी भाग्य से मिलती है' ऐसा तो कायर पुरुष ही कहते हैं। अतः भाग्य को छोड़कर अपनी पूरी शक्ति से प्रयत्न करो। यदि प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती तो सोचो कि क्या दोष है?

The wealth comes to industrious people only. Cowards say, "it is given by the luck". Hence, do not depend upon luck, try your level best. Even then if you do not succeed, think over it. There is some fault somewhere.

© NCERT not to be republished

पश्य कर्मवशात् प्राप्तं

भोज्यकालेऽपि भोजनम्।

हस्तोद्यमं बिना वक्त्रे

प्रविशेन्न कथंचन॥4॥

(व्याख्यानमाला 56/152/29)

देखो, यद्यपि भोजन करने के समय पर कर्म के अनुसार भोजन तो प्राप्त हो जाता है, लेकिन हाथ के प्रयत्न किए बिना वह मुख में नहीं जाता।

Look, although one can have food at meal time due to past deed, but without the efforts of hands it does not reach the mouth.

© NCERT not to be republished

4. एकता

न वै भिन्ना जातु चरन्ति धर्म
न वै सुखं प्राप्नुवन्तीह भिन्नाः।
न वै भिन्ना गौरवं प्राप्तुवन्ति
न वै भिन्ना प्रशमं रोचयन्ति॥5॥

(विदुरनीति)

जिस समाज के लोगों में एकता नहीं होती, वे न तो धर्म का पालन करते हैं, न सुखी हो सकते हैं, उन्हें गौरव भी नहीं मिलता और न ही उन्हें शान्तिमय जीवन मिलत है।

The people who are not united, cannot observe their dharma nor can they realise happiness in this world. They can not have respectability, nor can they have piece in their life.

© NCERT not to be republished

5. क्षमा

एकः क्षमावतां दोषो
द्वितीयो नोपपद्यते।
यदेनं क्षमया युक्त-
मशक्तं मन्यते जनः॥6॥

(व्याख्यानमाला 3/30)

लोग क्षमाशील व्यक्ति को निर्बल मानते हैं, यही क्षमाशील का एकमात्र दोष है और दूसरा नहीं।

The person who possesses the quality and forgiveness is generally considered to be weak, this is the only draw back in him and none else.

© NCERT not to be republished

सोऽस्य दोषो न मन्तव्यः

क्षमा हि परमं बलम्।

शान्तिः खड्गः करे यस्य

किं करिष्यति दुर्जनः॥7॥

(व्याख्यानमाला 3/39)

इसे उस क्षमावान् का दोष नहीं मानना चाहिए। क्षमा तो परम शक्ति है। जिसके हाथ में क्षमा रूपी तलवार है, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ सकता है।

This should not be considered to be a fault of considerate person since forgiveness is the highest strength. What harm can the wicked people do to the one who holds the sword of foregiveness in his hand.

© NCERT not to be republished

6. जनसंख्या-शिक्षा

एकेनापि सुवृक्षेण
पुष्पितेन सुगन्धिना
वासितं स्यात् वनं सर्व
सुपुत्रेण कुलं यथा॥४॥

(कस्यचित्)

सुगन्धित फूलों से लदे हुए एक वृक्ष से ही सारा सुवासित हो जाता है, जैसे एक सत्पुत्र से सम्पूर्ण कुल सुशोभित होता है।

The whole forest is filled with fragrance even if one nice tree blooms. Similarly, one good son gives fame to the whole clan.

© NCERT not to be republished

किं जातैर्बहुभिः पुत्रैः

शोकसन्तापकारकैः।

वरमेकः कुलालम्बी

यत्र विश्राम्यते कुलते॥7॥

(कस्यचित्)

शोक देने वाले बहुत पुत्रों से कोई लाभ नहीं है। अपने कुल का सहारा बनने वाला एक पुत्र ही अच्छा है, जिसे पाकर सारा कुल आनन्दित होता है।

Of what use are many sons who cause suffering and sorrows. It is better to have only one son, who helps and gives pleasure to his clan.

© NCERT not to be republished

7. त्यागः

उपार्जितानां वित्तानां

त्याग एव हि रक्षणम्।

तडागोदरसंस्थानां

परिवाह इवाम्भसाम्॥10॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 78/10)

संचित किए हुए धन का दान करना ही उसकी रक्षा करना है। जिस प्रकार तालाब के भीतर ठहरे हुए पानी का निकालना ही उसकी रक्षा है।

The distribution of the accumulated wealth is indeed its protection. Just as out letting of stignent water of a pond is its purificatin (protection).

© NCERT not to be republished

8. धर्ममार्गः

इज्याध्ययनदानानि

तपः सत्यं क्षमा दमः।

अलोभ इति मार्गोऽयं

धर्मस्याष्टविधः स्मृतः॥11॥

(हितोपदेशः मित्रलाभ 1/8)

धर्म की आठ विधियाँ हैं – यज्ञ, स्वाध्याय, दान, तपस्या, सत्य, क्षमा, मनोनिग्रह और अलोभ।

The eight ways of Dharma are - worship, self-studies, charity, penance, truth, forgiveness, mental control and greedlessness.

© NCERT not to be republished

9. धैर्यम्

छिन्नोऽपि रोहति तरुः

क्षीणोऽपयुपचीयते पुनश्चन्द्रः।

इति विमृशन्तः सन्तः

सन्तप्यन्ते न दुःखेषु॥12॥

(नीतिशतकम् 87)

वृक्ष कट जाने पर फिर उग आता है। चन्द्रमा क्षीण होने पर फिर बढ़ने लगता है। प्रकृति के इस नियम पर विचार करते हुए सज्जन लोग दुःख होने पर सन्ताप नहीं करते।

A tree even if when cut, it grows again, the moon afterbeing thin becomes gradually larger. Thus noble people do not repent when they face troubles.

© NCERT not to be republished

10. परोपकारः

छायामन्यस्य कुर्वन्ति
तिष्ठन्ति स्वयमातपे।
फलान्यपि परार्थाय
वृक्षाः सत्पुरुषा इव॥13॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् पृ. 236)

वृक्ष स्वयं धूप सहन सहन करते हैं और दूसरों को छाया देते हैं, उनके फल भी दूसरों के लिए होते हैं। वृक्ष सज्जनों के समान हैं।

Trees provide shadow to others but they themselves stand in the sun. Their fruits are also for others. Thus trees are like noble persons.

© NCERT not to be republished

11. पर्यावरणम्

वनस्पतीनां सर्वेषा-

मुपयोगः यथा यथा।

तथा तथा दमः कार्यो

हिंसायामिति धारणा॥14॥

(मनुस्मृतिः 8/285)

ऐसा माना जाता है कि जो वनस्पतियाँ जितनी अधिक हमारे उपयोग में आती हैं हमें उतनी ही अधिक संयम उनको नष्ट करने में बरतना चाहिए अर्थात् प्रकृति का नाश नहीं करना चाहिए।

It is held that we should restrain ourselves from destroying the trees and plants to the extent they are useful to us.

© NCERT not to be republished

12. मनस्विता

पादाहतं यदुत्थाय

मूर्धानमधिरोहति।

स्वस्थादेवापमानेऽपि

देहिनस्तद्वरं रजः॥15॥

(शिशुपालवधम् 2.46)

जो व्यक्ति अपमानित होकर भी शान्त रहता है, उससे तो वह धूल अधिक अच्छी है जो पांव की चोट खाकर सिर पर चढ़ जाती है।

Even the dust, when trampped with feet goes upon the head, is indeed, better than the person who keeps quiet even after being insulted.

© NCERT not to be republished

मनस्वी म्रियते कामं

कार्पण्यं न तु गच्छति।

अपि निर्वाणमायाति

नानलो याति शीतताम्॥16॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 83/19)

स्वाभिमानी व्यक्ति भले ही मर जाए किन्तु दीनता को स्वीकार नहीं करता जैसे अग्नि बुझ जाती है किन्तु वह शीतल नहीं होती।

The self-respecting person prefers to die than to accept the position of wretchedness just as a fire can be extinguished but can not be made to be cool.

© NCERT not to be republished

13. मैत्री

ददाति प्रतिगृह्णाति
गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव
षड्विधं प्रीतिलक्षणम्॥17॥

(पञ्चतन्त्रम्, मित्रसम्प्राप्तिः)

प्रेम अथवा मित्रता के छह लक्षण होते हैं–मित्रता में परस्पर आदान–प्रदान होता है, रहस्य की बातें कहीं और सुनी जाती हैं, खाया तथा खिलाया जाता है।

There are six characeristres of friendship - mutual exchange (give and take) sharing of the secrets (tells and listen) amd food (eats and feasts).

© NCERT not to be republished

14. राष्ट्रहितम्

प्रजासुखे सुखं राज्ञः

प्रजानां च हिते हितम्।

नात्मप्रियं हितं राज्ञः

प्रजानां तु प्रियं हितम्॥18॥

(अर्थशास्त्रम् 185)

प्रजा के सुख में ही राजा का सुख होता है। प्रजा का कल्याण की राजा का कल्याण है। राजा का अपना प्रिय कल्याण नहीं होता, अपितु प्रजा के प्रिय में ही उनका कल्याण होता है।

The happiness of a king lies in the happiness of his subjects and his welfare lies, therefore, in the welfare of his people. Whatever is dear to a king would not beneficial to him but whatever is good for the subject (people) is beneficial to him.

© NCERT not to be republished

भयार्तानां भयात् त्राता

दीनानुग्रहकारणात्।

कार्याकार्यविशेषज्ञो

नित्यं राष्ट्रहिते रतः॥19॥

(कस्यचित्)

(शासक को) भयातुर मनुष्यों की भय से रक्षा करनी चाहिए दीनों पर अनुग्रह करना चाहिए और कार्य-अकार्य (कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य) विशेष रूप से समझते हुए सदैव राष्ट्रहित में लगा रहना चाहिए।

A ruler should protect the people, suffering from fear and should be kind enough to the wretched, he should be wise enough to diseriminate is worth doing and what is not. He should always work in the interest of the nation.

© NCERT not to be republished

15. वर्णसाम्यम्

न विशेषोऽस्ति वर्णानां
सर्वं ब्राह्ममिदं जगत्।
ब्रह्मणा पूर्वसृष्टं हि
कर्मभिर्वर्णतां गतम्॥20॥

(महाभारत शान्तिपर्व 181/10)

यह जगत् ब्रह्म से उत्पन्न है, अतः वर्णों का कोई विशेष महत्त्व नहीं होता। ब्रह्म द्वारा रचित सृष्टि में कर्मों के आधार पर वर्ण व्यवस्था बनी है।

The Brahma is the cause of universe (hence) the different varnas have no significance. The different varnas have come into existance in this universe, created by the Brahma because of Karmas (work) only.

© NCERT not to be republished

16. विद्या

प्रथमे नार्जिता विद्या

द्वितीये नार्जितं धनम्।

तृतीये नार्जितं पुण्यं

चतुर्थे किं करिष्यति॥21॥

(व्याख्यानमाला विद्या 37)

जिस व्यक्ति ने जीवन के पहले चरण में विद्या अर्जित नहीं की, दूसरे चरण में धन नहीं कमाया और तीसरे चरण में पुण्य नहीं कमाया, वह चौथे चरण में क्या करेगा? (अर्थात् ऐसा व्यक्ति अन्तिम समय में कुछ भी नहीं कर सकेगा।)

One who has not acquired knowledge in the first phase of life, wealth in the second phase and merits (Punyas) in the Third phase. What can he do in the fourth phase of his life?

विद्या विवादाय धनं मदाय

शक्तिः परेषां परिपीडनाय।

© NCERT not to be republished

खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्

ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय॥22॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 60/889)

दुष्ट व्यक्ति अपनी विद्या का उपयोग विवाद करने के लिए करता है। उसका धन अभिमान के लिए होता है। उसकी शक्ति का उपयोग दूसरों को पीड़ा देने में होता है। इसके विपरीत सज्जन व्यक्ति की विद्या का उपयोग ज्ञान के लिए, धन का दान के लिए और शक्ति का निर्बलों की रक्षा के लिए होता है।

A wicked person uses his learning for futile discussion, wealth to show arrogance and power to oppress others, contrary to it noble perse uses his learning for knowledge, wealth to help others and power to protect others.

© NCERT not to be republished

17. विद्यामहिमा

रूपयौवनसम्पन्ना

विशालकुलसम्भवाः।

विद्याहीना न शोभन्ते

निर्गन्धा इव किंशुकाः॥23॥

(चाणक्यनीतिदर्पण 318)

मनुष्य कितना ही सुन्दर हो, कितना ही जवाल हो, कितने ही उच्चकुल में उत्पन्न हुआ हो, यदि वह विद्याविहीन है तो निर्गन्ध किंशुक (टेसू) फूल की तरह कभी भी शोभित नहीं होता।

However a person may be a handsome and youthful, he may even be born in a high family, but if he is devoid of learning, he is like a beautiful kimshuka flower devoid of fragrance.

© NCERT not to be republished

18. सज्जनः

गंगा पापं शशी तापं

दैन्यं कल्पतरुस्तथा।

पापं तापं च दैन्यं च

ध्यन्ति सन्तो महाशयाः॥24॥

गंगा मनुष्यों के पापों को दूर करती है। चन्द्रमा शरीर के ताप को दूर करता है। कल्पवृक्ष निर्धनता का नाश करता है। किन्तु उदारचरित संत, पाप, ताप, तथा दीनता तीनों को नष्ट करते हैं।

The Gangas washes away the sins, the Moon dispels the heat and the Kalptaru (The divine Tree) removes the poverty but the broadminded noble persons remove all the three: sin, agony and the poverty.

© NCERT not to be republished

19. सज्जनमहिमा

मनस्यन्यद् वचस्यन्यद्

कर्मण्यन्यद् दुरात्मनाम्।

मनस्येकं वचस्येकं

कर्मण्येकं महात्मनाम्॥25॥

(हितोपदेश, मित्रलाभ)

दुष्ट व्यक्तियों के मन में कुछ रहता है, वचन में कुछ और रहता है तथा कर्म में कुछ और ही रहता है। किन्तु महान् पुरुषों के मन, वचन और कर्म में एक ही बात रहती है।

The wicked persons differ in their thought speech and actions where as the noble person have no contradiction in their thought, speech and action.

© NCERT not to be republished

20. सज्जनस्वभावः

उपकर्तुं प्रियं वक्तुं
कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम्।
सुजनानां स्वभावोऽयं
केनेन्दुः शिशिरीकृतः॥26॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 47/38)

उपकार करना, मीठी बोलना और निष्कपट भाव से प्रेम करना ही सज्जनों का स्वभाव होता है। चन्द्रमा को किसने शीतल बनाया है? (शीतलता तो उसका स्वभाव ही है)

It is the very nature of the noble people to help others, to speak sweetly and to bestow true love and affection upon all. No one has made moon so cool?

© NCERT not to be republished

21. सत्यम्

नास्ति सत्यसमो धर्मो

न सत्याद्विद्यते परम्

नहि तीव्रतरं किंचिद्

अनृतादिह विद्यते॥27॥

(व्याख्यानमाला 4/2)

सत्य के समान धर्म नहीं है। सत्य से बढ़ कर कुछ नहीं है और झूठ से बढ़कर दु:खदायी कुछ नहीं है।

There is no Dharma like the truth. There is nothing beyond the truth. There is nothing more pungent than the untruth.

© NCERT not to be republished

सत्यमेवेश्वरो लोके

सत्ये धर्मः समाश्रितः।

सत्यमूलानि सर्वाणि

सत्यान्नास्ति परं पदम्॥28॥

(कस्यचित्)

संसार में सत्य ही ईश्वर है। सत्य पर ही धर्म टिका है। सबका मूल सत्य है। सत्य के परे कुछ नहीं है।

The truth is God in this world. Even the Dharma is based upon the truth. The truth is the root of all. There is nothing beyond truth.

© NCERT not to be republished

22. सत्संगतिः

दुर्जनः परिहर्तव्यो

विद्ययालङ्कृतोऽपि सन्।

मणिना भूषितः सर्पः

किमसौ न भयङ्करः॥29॥

(भर्तृहरिः नीतिशतकम्)

दुष्ट व्यक्ति का परित्याग करना चाहिए चाहे वह विद्या से अलंकृत ही क्यों न हो। क्या मणि से भूषित सर्प भयंकर नहीं होता?

A wicked man, though embellished with learning, should be avoided. Is the serpant, though adorned with, jem not dangerous?

© NCERT not to be republished

23. सदाचारः

न कश्चित्कस्यचिन्मित्रं
न कश्चित् कस्यचिद्रिपुः।
व्यवहारेण जायन्ते
मित्राणि रिपवस्तथा॥30॥

(हितोपदेशः, मित्रलाभ 72)

न कोई किसी का मित्र है और न ही कोई शत्रु। व्यवहार के द्वारा ही मित्र और शत्रु बनते हैं।

No one is one's friend or enemy, it is one's behaviour that makes friends or enemies.

© NCERT not to be republished

24. समय-निष्ठा

नष्टं द्रव्यं प्राप्यते ह्युद्यमेन
नष्टा विद्या प्राप्यतेऽभ्यासयुक्त्या।
आरोग्यं सूपचारैः सुसाध्यं
नष्टा वेला या गता सा गतैव॥31॥

(कस्यचित्)

नष्ट हुआ धन परिश्रम से फिर प्राप्त किया जा सकता है। नष्ट हुआ (विस्मृत) विद्या अभ्यास से पुनः प्राप्त की जा सकती है। खोया हुआ स्वास्थ्य उत्तम उपचार से फिर प्राप्त किया जा सकता है। किंतु जो समय चला गया है, वह सदा के लिए चला जाता है।

The lost wealth can be regained by hard work, lost learning can be attained again by practice, lost health can be recovered by good treatment but the time lost is lost for ever.

© NCERT not to be republished

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत

पूर्वाह्णे चापराह्णिकम्।

न हि प्रतीक्षते मश्त्युः

कृतमस्य न वा कृतम्॥32॥

(सुभाषितावलिः 5/9/3281)

कल का काम आज ही कर लें, शाम को किए जाने वाले काम को सुबह ही कर लें। क्योंकि मृत्यु इस बात की प्रतीक्षा नहीं करती कि किसी ने अपना काम पूरा किया है या नहीं।

Let us aet today instead of Tomorrow. Let us finish the work in the morning which we intend to do in the evening. For the death would not wait to see whether you have completed you work or not.

© NCERT not to be republished

25. मिथ्यंहकारः

अगाधजलसञ्चारी न गर्वाति रोहितः।

अङ्गुष्ठोदकमात्रेण शफरी फुरायते॥33॥

(सुभाषितरत्नभाण्डागारम् 247/2)

अथाह जल में संचरण करने वाली बड़ी रोहित (रोहु) मछली कभी गर्व नहीं करती पर यह अंगुष्ठ मात्र (उथले) में रहने वाली छोटी शफरी (मछली) फुड़फुड़ करती रहती है।

The big Rohit fish does not take pride in itself even while moving in unfathomable waters, but the small Safari fish derts to and fro with pride even in thumbdeep water.

© NCERT not to be republished

26. स्वावलम्बनम्

न याचेत परान् धीरः
स्वबाहुबलमाश्रयेत्।
स्वशरीरं सदा रक्षे
दाहाराचारयोरपि॥34॥

(कस्यचित्)

धीर पुरुष को दूसरों से याचना नहीं करनी चाहिए। अपने बाहुबल का भरोसा करना चाहिए। आहार और आचार के द्वारा सदा अपने शरीर की रक्षा करनी चाहिए।

A steadfast person should not beg from others; he should have faith in his own strength and he should always protect his body with proper food and conduct.

© NCERT not to be republished

श्लोकानुक्रमणी

अगाधजलसञ्चारी	93
अजीर्णे भेषजं	5
अधमा धनमिच्छन्ति	26
अनारोग्यमनायुष्यम्	61
अभिवादनशीलस्य	25
अयं निजः परो	21
अष्टादशपुराणेषु	11
अहो एषां वरं	13
आपात्कालेऽपि	15
इज्याध्ययनदानानि	71
उत्सवे व्यसने चैव	46
उद्यमेन हि सिध्यन्ति	6
उद्योगिनं पुरुषसिंह	63
उपकर्तुं प्रियं वक्तुं	86
उपार्जितानां वित्तानां	70
एकेनापि सुवृक्षेण	68
एकेनापि सुपुत्रेण	53
एकेनापि सुवृक्षेण	68

© NCERT not to be republished

एकोऽपि गुणवान् 37
एकः क्षमावतां दोष 66
काकचेष्टा 4
कामधेनुगुणा 50
किमत्र चित्रं 22
किं जातैर्बहुभिः 69
किं तस्य मानुषत्वेन 50
कुसुमस्तबकस्येव 43
क्षमा बलमशक्तानां 35
क्षमाशस्त्रं करे 8
गच्छन् पिपीलको 33
गंगा पापं शशी 84
चिन्तनीया हि 57
छायामन्यस्य 73
छिन्नोऽपि रोहति 72
तरवोऽपि हि 44
ददाति प्रति गृहणाति 77
दुर्जनः परिहर्तव्यो 89
धृतिः क्षमा 38
न कश्चिदपि 7
न कश्चि त्कस्यचिन्मित्रं 90

© NCERT not to be republished

न चौरहार्यं 16
नमन्ति फलिनो 16
नरस्याभरणं रूपं 36
न याचेत् परान् 94
न विशेषोऽस्ति 80
न वै भिन्ना जातु 65
नष्टं द्रव्यं प्राप्यते 91
नारिकेलसमाकाराः 53
नास्ति सत्यसमो 87
परोक्षे कार्यहन्तारं 47
पश्य कर्मवशात् 64
पादाहतं यदुत्थाय 75
पिबन्ति नद्यः 41
पुष्प-पत्र फलच्छाया 14
प्रजासुखे सुखं 78
प्रथमे नार्जिता 81
प्राणायामेन युक्तेन 62
भयार्तानां भयात् 79
मनस्यन्यद् 85
मनस्वी म्रियते कामं 76
महाजनस्य संसर्गः 24

© NCERT not to be republished

माता शत्रुः 18
मातृवत् परदारेषु 40
यत्र नार्यस्तु 20
यथा खनन् खनित्रेण 31
यः पठति लिखति 49
यस्मिन् जीवति 42
रक्षन्ति कृपणाः 10
रूपयौवनसम्पन्ना 83
लाघवं कर्मसामर्थ्यं 32
वनस्पतीनां सर्वेषां 74
वरमेको गुणी 9
विकृतिं नैव गच्छन्ति 56
विद्या ददाति विनयं 17
विद्या विवादाय 82
विद्वत्त्वं च नृपत्वं 51
विश्वामित्रो वशिष्ठश्च 48
विहाय पौरुषं यो हि 34
वेदः स्मृतिः सदाचार 39
शुकवद् भाषणं 29
श्वः कार्यमद्य 92
श्रोत्रं श्रुतेनैव 12

© NCERT not to be republished

षड्दोषाः पुरुषेणे	30
सत्यमेवेश्वरो लोके	88
सत्यं धर्मस्तपो	54
सत्यस्य वचनं	23
सत्यं ब्रूयात्	54
सर्वे भवन्तु सुखिनः	45
सुखार्थिन	3
सोऽस्य दोषो न	67

© NCERT not to be republished